क्षेत्रं

छलित: १। जात: शर: १। व्यासात् १०। शरोनात् ९। शर १। सङ्गुणात् ९। मूलम् ३। द्विनिघ्नं जाता जीवा ६। एवं ज्ञाताभ्यां ज्या-वाणाभ्यां व्यासानयनं यथा जीवा- ६। दलं ३। वर्गे ९। शर १। भक्ते ९। शर १। युक्ते जातो व्यास: १०।

अथ वृत्तान्तस्त्र्यस्रादिनवास्रान्तक्षेत्राणां
भुजमानानयनाय करणसूत्रं
वृत्तत्रयम्।

त्रिद्व्यङ्काग्निनभश्चन्द्रै: १०३९२३
शरवाणाष्टयुगाष्टभि: ८४८५३।
वेदाग्निवाणखाश्वैश्च ७०५३४
खखाभ्राभ्ररसै: ६०००० क्रमात् ॥
वाणेषुनखवाणैश्च ५२०५५
द्विद्विनन्देषुसागरै: ४५९२२।
कुरामदस्रवेदैश्च ४१०३१ वृत्तव्यासे समाहते॥
खखखाभ्रार्क- १२०००० संभक्ते
लभ्यन्ते क्रमशो भुजा:।
वृत्तान्तस्त्र्यस्रपूर्वाणां
नवास्रान्तं पृथक् पृथक् ॥

उदाहरणम्।

सहस्रद्वितयव्यासं यद्वृत्तं तस्य मध्यत:।
समत्र्यस्रादिकानां मे भुजान् वद पृथक् पृथक्॥

अथ वृत्तान्तस्त्रिभुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

व्यास: २०००। त्रिद्व्यङ्काग्निनभश्चन्द्रै: १०३९२३। गुणित:२०७८४६०००। खखखाभ्रार्कै:१२००००। भक्ते लब्धं त्र्यस्रे भुजमानं १७३२ १/२०।

वृत्तान्तश्चतुर्भुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

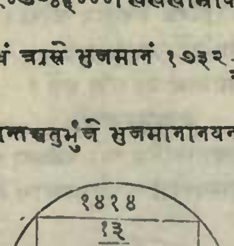

व्यास: २००० शरवाणाष्टयुगाष्टभि: ८४८५३ गुणित: १६९७०६,०००। खखखाभ्रार्कै:१२००००। भक्ते लब्धं चतुरस्रे भुजमानं १४१४ १३/६०।

क्षेत्रं

वृत्तान्त:पञ्चभुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

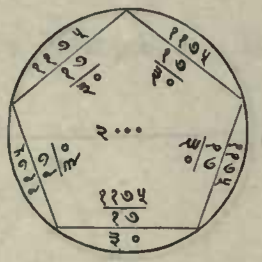

व्यास: २०००। वेदाग्निवाणखाश्वै:७०५३४। गुणित: १४१०६८००० खखखाभ्रार्कै:१२००००। भक्ते लब्धं पञ्चास्रे भुजमानं ११७५ १७/३०।

वृत्तान्त:षड्भुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

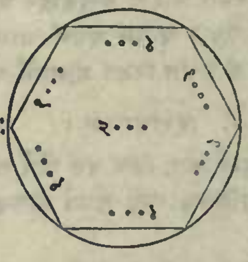

व्यास:२००० खखाभ्राभ्ररसै: ६००००। गुणित: १२०,०००,०००। खखखाभ्रार्कै:१२००००। भक्ते लब्धं षडस्रे भुजमानं १०००।

वृत्तान्त:सप्तभुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

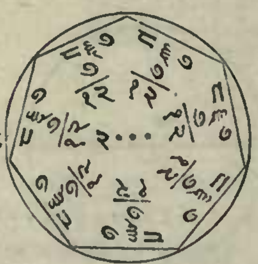

व्यास: २००० वाणेषुनखवाणै: ५२०५५। गुणित: १०४,११०,०००। खखखाभ्रार्कै:१२००००। भक्ते लब्धं सप्तास्रे भुजमानं ८६७ ७/१२।

वृत्तान्तरष्टभुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

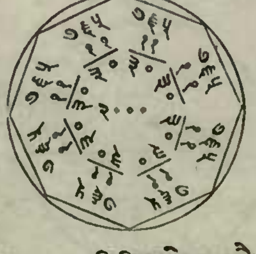

व्यास: २०००। द्विद्विनन्देषुसागरै: ४५९२२। गुणित: ९१,८४४,०००। खखखाभ्रार्कै:१२०००० भक्ते लब्धमष्टास्रे भुजमानं ७६५ ११/३०।

क्षेत्रं

वृत्तान्तर्नवभुजे भुजमानानयनाय।

न्यास:

व्यास: २०००। कुरामदस्रवेदै: ४१०३१ गुणित: ८२,०६२,०००। खखखाभ्रार्कै:१२००००। भक्ते लब्धं नवास्रे भुजमानं ६८३ १७/२०।

एवमिष्टव्यासादेभ्योऽन्यापि जीवा: सिध्य-न्तीति तास्तु गोले ज्योत्पत्तौ वक्ष्ये।

अथ स्थूलजीवाज्ञानार्थं लघुक्रियया
करणसूत्रं वृत्तम्।

चापोननिघ्नपरिधि: प्रथमाह्वय: स्यात्
पञ्चाहत: परिधिवर्गचतुर्थभाग:।
आद्योनितेन खलु तेन भजेच्चतुर्घ्न-
व्यासाहतं प्रथममाप्तमिह ज्यका स्यात् ॥

उदाहरणम्।

अष्टादशांशेन वृते: समान-
मेकादिनिघ्नेन च यत्र चापम्।
पृथक् पृथक् तत्र वदाशु जीवां
खार्कैर्मितं व्यासदलञ्च यत्र ॥

७५४

न्यास:

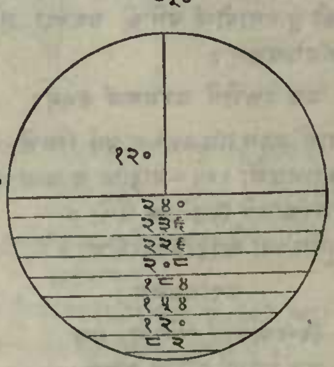

४२

व्यास: २४०। अत्र किलाङ्कलाघवाय विंशते: सार्द्धांकशतांशमिलित: स्थूलपरिधि: ७५४। अस्याष्टादशांश: ४२। अत्रापि अङ्कलाघवाय द्वयोरष्टादशांशयुतो गृहीत: अनेन पृथक् पृथगेकादिगुणितेन तुल्ये धनुषि कल्पिते ज्या: साध्या:।

अथवात्र सुखार्थं परिधेरष्टादशांशेन परिधिं धनूंषि चापवर्त्य ज्या: साध्यास्तथापि ता एव भवन्ति।

अपवर्त्तिते व्यास:। परिधि: १८। चापानि च १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। यथोक्त-करणेन लब्धा जीवा: ४१। ८२। १२०। १५४। १८४। २०८। २२६। २३६। २४०।